आदिकाल के अन्य साहित्यकार

डॉ. कृष्ण कुमार पासवान
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग
राम चरित्र सिंह महाविद्यालय
मंझौल, बेगुसराय
सम्पर्क : ksoni.hindi@gmail.com

वीरगाथा एवं भक्ति इन दो धाराओं के बीच कई कवियों ने आदिकाल के दौरान साहित्यिक रचनाएं इन रचनाकारों में दो प्रमुख नाम हैं - 'विद्यापति' और 'अमीर खुसरो।'

क) विद्यापति (अनुमानत: 1368 - 1448 ई.)

विद्यापति आदिकाल के लौकिक काव्य के रचनाकार माने जाते हैं। इन्हें हिन्दी में कृष्ण भक्ति काव्य का पहला रचयिता माना जाता है। इन्होंने राधा-कृष्ण प्रेम वर्णन की परंपरा को संस्कृत रचनाकार जयदेव से ग्रहण किया है।

इन्होंने संस्कृत व हिन्दी दोनों भाषाओं में काव्य रचना की है। हिन्दी में 'कीर्तिलता', 'कीर्तिपताका' व 'पदावली' का उल्लेख मिलता है किंतु इनमें से कीर्तिपताका उपलब्ध नहीं है। 'कीर्तिलता' की रचना विद्यापति ने अपने पहले आश्रयदाता राजा कीर्तिसिंह के दरबार में की थी। इसमें उन्होंने अपने राजा की विजय गाथा का वर्णन किया है। यह ठेठ दरबारी व अतिशयोक्तिपूर्ण रचना है किंतु इसके ऐतिहासिक तथ्यों की सत्यता सुरक्षित है। यह प्रबंधात्मक रचना 'अवहट्ठ' में लिखि गई है।

अन्य रचना 'पदावली' इन्होंने दूसरे आश्रयदाता राजा शिवसिंह के दरबार में लिखी है। यह कवि के यश का आधर स्तंभ है। इसमें कृष्ण भक्ति पर आधारित मुक्तक पदों का संग्रह है। इस पर विवाद है कि यह रचना भक्तिपरक है या श्रृंगारपरक क्योंकि राध-कृष्ण को केंद्र में रखकर कवि ने श्रृंगारिक भावों को अभिव्यक्त किया है। उदाहरण के लिए प्रस्तुत पंक्तियों में नायिका के सौंदर्य का वर्णन किया गया है-

'आध बदन ससि विहंति देखावति आध पिहलि निज बाहू।
कधु एक भाग बलाहक झांपल किधुक गरासल राहू।'

यह रचना कहीं-कहीं अश्लीलता की सभी हदें तोड़ती दिखाई देती है। आचार्य रामचन्द्रशुक्ल आदि विद्वानों ने इसके भक्तिपरक होने पर संदेह व्यक्त किया है। इसकी रचना मैथिली भाषा में हुई है इसमें लोक धुनों का समावेश है तथा पद-निर्माण में राग-रागनियों का विशेष ध्यान रखा गया है।

ख) अमीर खुसरो (1255 **से** 1325 **ई. के आस-पास**)

अमीर खुसरो का वास्तविक नाम अबुल हसन था। ये दिल्ली सल्तनत के कई सुल्तानों के राजदरबारी कवि रहे। इन्हें उर्दू व खड़ीबोली हिन्दी का पहला कवि माना जाता है। इन्होंने लगभग सौ ग्रंथों की रचनाएं की लेकिन अब तक लगभग बीस-बाइस ग्रंथ ही उपलब्ध हो सके हैं।

इनकी उपलब्ध रचनाओं में निम्नलिखित का उल्लेख किया जा सकता है- 'पहेलियां, मुकरियां, ढकोसला, ग़ज़ल, दो सखुने, खालिकबारी आदि।

पहेली का उदाहरण-

'एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे।।'

(आकाश/आसमान**)**

मुकरी का उदाहरण-

'मेरा मोसे सिंगार करावत, आगे बैठे के मान बढ़ावत।
वासे चिक्कन ना कोउ दिसा, ऐ सखि साजन। ना सखि सीसा।।'

इनकी रचनाओं का मूल उद्देश्य लोकरंजन था। अमीर खुसरो बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न थे। एक ओर पक्के राजदरबारी कवि थे तो दूसरी ओर सूफी परंपरा से प्रभवित। वे कवि होने के साथ संगीतकार भी थे। वे खड़ीबोली हिन्दी व शुद्ध फारसी दोनों ही भाषाओं में काव्य रचना कर रहे थे। निजामुद्दीन औलिया की मृत्यु पर लिखी गई इनकी एक उक्ति बहुत प्रसिद्ध है -

‘गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस।

चल खुसरो घर आपने, रैन भई चंतु देस।’

खड़ीबोली काव्य के आरंभिक स्वरूप के विकास में अभूतपूर्ण योगदान देने के लिए हिन्दी साहित्य परंपरा में ये विशेष महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। खुसरो ने ऐसी पंक्तियां रची हैं जिनमें फारसी और हिंदी को एक ही ध्वनि प्रवाह में गुंफित कर दिया गया है। यह कला संस्कृति-साधन की ही सिद्ध हो सकती है।

‘जे हाल भिसकीं मकुन तग़ाफुल दुराय नैना, बनाय बतियां।

कि ताबे हिज्रां न दारम ऐ जां, न लेहु काहे लगाय छतियां।

शबाने हिज्रां दराज़ चूं जुल्फ व रोज़े बसलत यूं उम्र कोतह।

सखि! पिया को जो मैं न देखूं तो कैसे काटूं अंधेरी रतियां।

(समाप्त)